DR. SUMAN LAL RAY
Assistant Professor
(Guest faculty)
S.R.A.P. college, Bara chakia,
Deptt. of Sanskrit

B.A. (Hons.), part – II

7×2 = 14 marks

Subject – Sanskrit

Paper – IV

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (प्रथमोऽङ्कः)

संस्कृत श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद

Q 10

न खलु न खलु बाणः सन्निपात्योऽयमस्मिन्
मृदुनि मृगशरीरे पुष्पराशाविवाग्निः ।
क्व वत हरिणकानां जीवितं चातिलोलं
क्व च निशितनिपाता वज्रसाराः शरास्ते ॥
(अभि० 1/10)

अन्वयः

मृदुनि अस्मिन् मृगशरीरे अयं बाणः पुष्पराशौ अग्निः इव न खलु न खलु सन्निपात्यः, वत क्व च अतिलोलं हरिणकानां जीवितं क्व च निशितनिपाताः वज्रसाराः ते शराः ॥

अनुवाद

आप हरिण के कोमल शरीर पर वह बाण पुष्प की ढेर पर या रुई की पुञ्ज पर आग के समान मत छोड़िए, मत छोड़िए, क्योंकि कहाँ इन बेचारे हरिणों के अत्यन्त कोमल शरीर एवं प्राण और कहाँ वज्र के समान कठोर एवं तीक्ष्ण ये आपके बाण।

———— ० ————